**ओ३म्**

**‘प. लेखराम जी की शहादत से प्रेरणा लेना ही उनके**

 **बलिदान पर्व का उद्देश्य व महत्व’**

**-मनमोहन कुमार आर्य**

आज 6 मार्च का दिन पं. लेखराम जी का 120 वां बलिदान दिवस होने के कारण उनके जीवन पर विचार करने और उनसे प्रेरणा ग्रहण करने का दिवस है। पं. लेखराम जी का आरम्भिक जीवन साधारण मनुष्यों की भांति ही था परन्तु ऋषि दयानन्द वा वेदों के विचारों के स्पर्श व उस पर उनकी अद्भुत श्रद्धा व भक्ति एवं उसी के लिए अपने प्राणों को अर्पित कर देने के कारण आज वह वैदिक धर्म पर शहीद हुए बलिदानियों में उच्चस्थ स्थान पर हैं। आज का दिन उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर उनके गुणों को अपने जीवन में धारण करने पर विचार करने का दिन है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य मात्र अर्थ प्राप्ति की शिक्षा प्राप्त कर भोग की सामग्री को एकत्रित करना ही नहीं है अपितु इस संसार की उत्पत्ति, ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप व जीवात्मा व मनुष्य जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य को जानकर सभी रहस्यों से परिचित होकर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करते हुए आत्मा का कल्याण अर्थात् शुभ गुणों को धारण करते हुए ईश्वर साक्षात्कार कर मोक्ष की प्राप्ति करना है। पण्डित लेखराम जी के जीवन काल में विधर्मी मिथ्या ज्ञान व अविद्या के सहारे वैदिक धर्म का ह्रास कर रहे थे। ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत कर उसके महत्व को प्रस्तुत किया था जो इस जन्म में अभ्युदय प्राप्त कराने के साथ मृत्यु होने पर निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष जो कि जीवात्मा के सुख की चरम अवस्था होती है तथा जिसमें दुःख का लेश भी नहीं होता, का प्रचार वेद, युक्ति व तर्क के द्वारा किया था। पं. लेखराम जी ने ऋषि दयानन्द की वैदिक मान्यताओं, सिद्धान्तों व उद्देश्यों को ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाया था और अपनी योग्यता से वैदिक धर्म की महत्वपूर्ण सेवा व रक्षा की। सारा आर्य जगत् व सभी वैदिक धर्मी उनकी सेवाओं एवं बलिदान से सदा सदा के लिए ऋणी व कृतज्ञ हैं। उनके बलिदान ने यह सिद्ध कर दिया है कि वैदिक धर्म के विरोधियों के पास वेद और आर्यसमाज की मान्यताओं व सिद्धान्तों की काट व उनका उत्तर नहीं है। उनकी नींव असत्य व मिथ्या ज्ञान अथवा अविद्या पर आधारित है। वह वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का न तो सामना ही कर सकते हैं और न आक्षेपों का उत्तर ही दे सकते हैं। पं. लेखराम जी के बलिदान ने विपक्षियों व विरोधियों की सद्धान्तिक दृष्टि से पराजय प्रदर्शित की है। हमें पं. लेखराम जी से प्रेरणा लेकर ऋषि दयानन्द व उनके मार्ग पर चलना है। इसी से वैदिक धर्म का प्रसार होगा और हम पुण्य के भागी होंगे।

पंडित लेखराम जी सच्चे ब्राह्मण, धर्मवीर वा धर्मजिज्ञासु थे। आपका सारा जीवन एषणाओं से मुक्त जीवन था। धन व भौतिक पदार्थों का आपको किंचित भी मोह नहीं था। अर्थ शुचिता का यदि आदर्श रूप देखना हो तो वह महर्षि दयानन्द, पं. लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी व पं. गुरुदत्त आदि के जीवन में मिलता है। आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रचारक विद्वान थे। पंजाब सभा व स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रेरणा व प्रस्ताव से ही आपने ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित का अनुसंधान किया। इसके लिए वह उन सभी स्थानों पर गये जहां जहां ऋषि दयानन्द जी गये थे। वहां जाकर लेखराम जी ने उन व्यक्तियों की तलाश की, जो ऋषि दयानन्द के जीवन में उनसे मिले थे, उन्हें देखा था, उनके सम्पर्क में आये थे या उनके प्रवचनों आदि से लाभान्वित हुए थे। ऐसे व्यक्तियों का पता कर आपने उनसे ऋषि के बारे में जानकारी ली थी। उनके संस्मरणों को पता कर उनके ही शब्दों में आपने उसे लिपिबद्ध करके ऋषि जीवन चरित में प्रकाशित किया है। यद्यपि ऋषि के पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द, श्री गोपालराव हरि, श्री रामविलास शारदा, श्री हरविलास शारदा, मास्टर लक्ष्मण आर्य और डा. भवानीलाल भारतीय आदि सभी जीवन चरित महत्वपूर्ण हैं परन्तु पं. लेखराम जी ने जो तथ्यात्मक जीवन चरित दिया है वही जीवन चरित सामग्री की दृष्टि से परवर्ती विद्वानों का मुख्य आधार बना है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है। इसे पढ़कर पाठकों को सन्तोष व प्रसन्नता का अनुभव होता है। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि यदि पं. लेखराम जी द्वारा यह कार्य सम्पन्न न किया जाता तो आज ऋषि के जो व जितने जीवन चरित उपलब्ध होते हैं, घटनाओं की दृष्टि से उन सबका आकार अत्यन्त संक्षिप्त व न्यून होता। इस कार्य के लिए भी सारा आर्यजगत पं. लेखराम जी का ऋणी है। न केवल यह एक ग्रन्थ ही, अपितु पं. लेखराम जी ने वैदिक धर्म व ऋषि दयानन्द की मान्यताओं एवं सिद्धान्तों के पोषक अनेक ग्रन्थों का सृजन किया है। **‘कुलियात आर्य मुसाफिर’** ग्रन्थ में उनकी प्रायः सभी रचनाओं को संग्रहित किया है। आजकल संभवतः यह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होता परन्तु हम भाग्यशाली है कि हमारे पास यह ग्रन्थ हैं और हमने उसका अधिकांश भाग पढ़ा है।

पं. लेखराम ने स्थान स्थान पर जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करने के साथ आर्यसमाजों की स्थापना, विधिर्मियों के आर्यों के धर्मान्तरण कार्य में बाधा उत्पन्न करने सहित धर्मान्तरित बन्धुओं को वैदिक धर्म मे ंप्रविष्ट कराया। उन्होंने शुद्धि का जो कार्य किया है व वेद विरोधी मुस्लिम विद्वानों को जो चुनौतियां दीं, वही उनकी हत्या व बलिदान का कारण बना। इस कार्य को करते हुए उन्होंने कभी अपनी माता, धर्मपत्नी व 1 वर्ष 3 माह की अल्पायु में मृत्यु को प्राप्त पुत्र **‘सुखदेव’** के प्रति मोह का किंचित भी परिचय नहीं दिया अर्थात् आप पारिवारिक मोह ऊपर उठे हुए थे। आपकी धर्मपत्नी माता लक्ष्मी देवी जी भी आप की ही तरह वैदिक घर्म प्रेमी व ऋषि भक्त थी। आप उन्हें शिक्षित कर आर्यसमाज की प्रचारिका बनाना चाहते थे। पं. लेखराम जी की मृत्यु पर माता लक्ष्मीदेवी जी को इंश्योरेंस से जो बीमे की राशि मिली थी, वह उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी को पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जी की शिक्षा में व्यय के लिए दान में दे दी थी। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जो बाद में स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए, वह भी अद्भुद प्रतिभाशाली थे। गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ उन्हीं का स्मारक है जिसे उन्होंने ही स्थापित किया था। कायाकल्प, वैदिक वर्ण व्यवव्स्था की समर्थक, उनकी एक महत्वपूर्ण कृति है जिसमें गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था का पोषण किया गया है। आपने भी अपने समय में वैदिक धर्म का आदर्श रूप में प्रचार किया। देहरादून के पं. कृपाराम जी, पं. बुद्धदेव विद्यालंकार के नाना जी थे जिन्होंने महर्षि दयानन्द को देहरादून आमंत्रित किया था और यहां उनके प्रवचन आदि की व्यवस्था की थी। पं. लेखराम जी ने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अनेक आदर्श स्थापित किये। सभी का वर्णन यहां किया जाना शक्य नहीं हैं। हम उनके धर्म प्रेम की एक अतीव प्रेरणाप्रद घटना प्रस्तुत कर लेख को विराम देंगे।

पं. लेखराम जी को एक बार सूचना मिली की लुधियाना के दोराहा गांव के हिन्दूओं का धर्मान्तरण किया जा रहा है। यह उनके लिए असह्य था। उन्होंने तत्काल वहां जाने की तैयारी की। मेल एक्सप्रेस रेलगाड़ी का टिकट लिया और यह निश्चय होने पर गांड़ी दोराहा रुकेगी नहीं, उन्होंने चलती रेल से कूटने की योजना बना डाली। आपने अपने बिस्तर को अपनी छाती के चारों ओर लपेटकर चलती रेल से छलांग लगा दी। आपके शरीर के अनेक भागों में चोटे लगी। आप लहुलुहान हो गये और इसी स्थिति में आप उस स्थान पर जा पहुंचे जहां हिन्दुओं को धर्मान्तरित कर मुसलमान बनाया जाना था। जब वह वहां के लोगों से मिले तो पूछने पर उन्होंने उन्हें अपनी यथार्थ कथा सुनाई। यह सुनकर सभी बन्धु स्तब्ध रह गये कि कोई व्यक्ति उनके धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा सकता है। वहां के लोग इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने धर्मान्तरण का अपना निश्चय त्याग दिया। स्वाभाविक है कि पंडित जी ने उसके बाद उन सभी बन्धुओं को वैदिक धर्म की महत्ता पर उपदेश भी अवश्य दिया होगा और उसके साथ ही मुस्लिम मत के अनेक अन्धविश्वासों व कुरीतियों का वर्णन भी किया होगा जिससे भविष्य में कोई उनको मूर्ख न बना सके। हमें पं. लेखराम जी के जीवन की यह घटना उनके गहरे धर्मभाव का प्रमाण प्रतीत होती है। आज के आर्यसमाजियों और अधिकांश नेताओं को देखकर नहीं लगता कि कभी पं. लेखराम व श्रद्धानन्द तथा पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी के रूप में ऐसे नेता भी आर्यसमाज में रहे हैं। इस लेख के साथ हम दोराहा स्टेशन का एक चित्र भी आपके लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

6 मार्च, सन् 1897 को एक मुस्लिम युवक ने धोखे से पं. लेखराम जी के लाहौर स्थित निवास पर सायं 7 बजे अपने छुरे को उनके पेट में घोप कर उनकी हत्या कर दी और भाग गया। जिस मनुष्य व समाज के पास किसी बात का उत्तर नहीं होता वह ऐसा ही कुकृत्य करता है। पं. लेखराम जी मरकर भी जीवित हैं। आज भी पण्डित लेखराम जी लक्षाधिक सच्चे आर्यों में जीवित हैं और हमेशा रहेंगे। वैदिक सत्य मत आज भी अपराजित है और अन्य सभी मत ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायियों द्वारा युक्ति, तर्क व प्रमाणों के आधार पर असत्य व अपूर्ण सिद्ध होते हैं। पं. लेखराम जी की मृत्यु पर पं. चमूपति जी और लाला लाजपत राय जी श्रद्धांजलियां प्रस्तुत हैं। पं. चमूपति जी के अनुसार **“वीर लेखराम की अर्थी के साथ सहस्त्रों मनुष्यों का तांता लग रहा था। लाहौर के नर-नारी इस निर्भीक युवक के बलिदान पर अत्यन्त क्षुब्ध थे। पृथिवी पर हर जगह फूल ही फूल दीखते थे। गुलाब के पानी के कंटर पर कंटर बहा दिये गये। आर्यजाति में एक नई स्फूर्ति थी, नया आवेग था। प्रतीत यह होता था कि एक धर्मवीर के बलिदान ने सम्पूर्ण जाति को नया जीवन प्रदान कर दिया है। पवित्रता का पारावार था। उत्साह ठाठें मार रहा था। साहस की बाढ़ आ गई थी। जिधर देखो, कर्मण्यता-पूर्ण वैराग्य था।”** लाला लाजपत राय जी ने कहा है कि **‘‘पं. लेखराम जी लेखनी की तलवार लेकर कार्यक्षेत्र में आया। विरोधियों की छावनी में भगदड़ मच गई। किसमें इतना साहस कि सामने आये? उसकी लेखनी ने वही कार्य किया जो स्वामी दर्शनानन्द की लेखनी व वाणी ने मिलकर सम्पन्न किया। कुलियाते आर्य मुसाफिर उसके अथक परिश्रम का ज्वलन्त प्रमाण है। मरने वाला मर गया। निर्दयी व क्रूर हत्यारे ने अपनी गर्दन पर निष्पाप लेखराम की हत्या का पाप लिया।”** धर्मवीर पण्डित लेखराम जी ने अपनी नश्वर देह का त्याग करते हुए आर्यो को यह सन्देश दिया था, **‘‘लेखनी व वाणी से प्रचार का कार्य बन्द न हो।”** आज आर्यों को उनकी इस वसीयत को पूरा करना है, तभी भविष्य में वेदाज्ञा **‘कृण्वन्तो विश्वमार्यम्’** चरितार्थ हो सकता है। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2,**

**देहरादून-248001**

**फोन-09412985121**